

ब्रह्मावर्त पी जी कॉलेज मंथना कानपुर

हिंदी विभाग

सत्र 2026-27

BA प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर, हिन्दी काव्य (**Course Code A010101T**) के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर नीचे **50** महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उनके लिखित उत्तर दिए जा रहे हैं। प्रत्येक उत्तर लगभग **100–125** शब्दों की सीमा में रखा गया है, ताकि परीक्षा में लघुत्तरीय उत्तर के रूप में लिखा जा सके।

BA Semester–1 हिन्दी काव्य

पाठ्यक्रम आधारित **50** महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन बताइए।

उत्तर:

हिन्दी साहित्य के इतिहास को सामान्यतः चार प्रमुख कालों में बाँटा जाता है— आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल। आदिकाल को वीरगाथा काल भी कहा जाता है। भक्तिकाल में भक्ति भावना की प्रधानता रही तथा इसे निर्गुण और सगुण दो धाराओं में बाँटा गया। रीतिकाल में श्रृंगार, अलंकार और काव्यशास्त्रीय प्रवृत्तियों का विकास हुआ। आधुनिककाल में राष्ट्रीय

चेतना, सामाजिक सुधार, व्यक्तिवाद, यथार्थवाद और आधुनिक जीवन-बोध प्रमुख बने। आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु, द्विवेदी, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, अज्ञेय, नागार्जुन आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार काल-विभाजन साहित्य के विकासक्रम को समझने का महत्वपूर्ण साधन है।

2. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या थीं?

उत्तर:

आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक विकासकाल है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियों में वीरता, युद्ध, राजाश्रय, धार्मिकता और लोकजीवन प्रमुख हैं। राजाओं और योद्धाओं के पराक्रम का वर्णन करने वाली रचनाएँ अधिक मिलती हैं। रासो साहित्य इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैन और सिद्ध साहित्य में धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई। नाथ साहित्य में योग-साधना तथा वैराग्य की भावना दिखाई देती है। लोक साहित्य में जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारम्भिक हिन्दी के रूप दिखाई देते हैं। इस काल ने आगे विकसित होने वाले हिन्दी काव्य की आधारभूमि तैयार की।

3. सिद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

सिद्ध साहित्य हिन्दी के प्रारम्भिक साहित्यिक विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। सिद्ध कवियों ने रूढ़ धार्मिक आडंबरों और कर्मकांडों का विरोध किया। उन्होंने आत्मानुभूति, सहज साधना, गुरु-महिमा और आंतरिक शुद्धता पर बल दिया। उनकी भाषा लोक

के निकट तथा सहज थी। सिद्धों ने बाहरी पूजा के स्थान पर मन की साधना को महत्व दिया। उनके काव्य में प्रतीकात्मकता और उलटबाँसी का प्रयोग मिलता है। सरहपा, शबरपा आदि सिद्ध कवि उल्लेखनीय हैं। सिद्ध साहित्य ने आगे चलकर निर्गुण संत काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की। इसलिए हिन्दी साहित्य के विकास में इसका विशेष महत्व है।

4. नाथ साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

नाथ साहित्य का संबंध योग-साधना और आध्यात्मिक चिंतन से है। नाथ कवियों ने हठयोग, गुरु-महिमा, आत्मसंयम और वैराग्य को महत्व दिया। उन्होंने बाहरी आडंबरों तथा रूढ़ियों का विरोध किया। नाथ साहित्य में शरीर को साधना का माध्यम माना गया है। गोरखनाथ इसके प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनकी वाणी में जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टि तथा आध्यात्मिक चेतना दिखाई देती है। नाथों की भाषा लोकभाषा के निकट थी, इसलिए उनका प्रभाव जनसाधारण तक पहुँचा। उनकी रचनाओं में रहस्यात्मकता और प्रतीकात्मकता भी मिलती है। निर्गुण संत काव्य पर नाथ साहित्य का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

5. भक्तिकाल के उदय के प्रमुख कारण क्या थे?

उत्तर:

भक्तिकाल के उदय के पीछे अनेक सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कारण थे। मध्यकालीन समाज में धार्मिक रूढ़ियाँ, जातिगत भेदभाव और कर्मकांड बढ़ रहे थे। सामान्य जनता को सरल आध्यात्मिक मार्ग की आवश्यकता थी। इसी परिस्थिति में

संतों और भक्त कवियों ने प्रेम, भक्ति और मानव समानता का संदेश दिया। दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा तथा वैष्णव आचार्यों का भी प्रभाव पड़ा। सूफी विचारधारा ने प्रेम और मानवतावाद को मजबूत किया। राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों ने भी इस वातावरण को प्रभावित किया। कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई आदि कवियों ने भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। इसलिए भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।

6. भक्तिकाल की प्रमुख धाराएँ कौन-सी हैं?

उत्तर:

भक्तिकाल को मुख्यतः निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति की दो धाराओं में विभाजित किया जाता है। निर्गुण धारा में ईश्वर को निराकार माना गया। इसके अंतर्गत संत काव्य और सूफी काव्य प्रमुख हैं। कबीर इसके प्रमुख संत कवि हैं। सगुण धारा में ईश्वर को साकार रूप में स्वीकार किया गया। इसके दो प्रमुख रूप हैं—रामभक्ति और कृष्णभक्ति। तुलसीदास रामभक्ति के तथा सूरदास कृष्णभक्ति के प्रमुख कवि हैं। निर्गुण काव्य में ज्ञान, गुरु, सामाजिक समानता और आडंबर-विरोध मिलता है, जबकि सगुण काव्य में प्रेम, भक्ति, लीला और समर्पण की भावना प्रमुख है।

7. सगुण और निर्गुण भक्ति में अंतर बताइए।

उत्तर:

निर्गुण भक्ति में ईश्वर को निराकार, अजन्मा और गुणातीत माना जाता है। भक्त ईश्वर की प्राप्ति ज्ञान, साधना और प्रेम के माध्यम से करना चाहता है। कबीर निर्गुण भक्ति के प्रमुख कवि हैं। इसके विपरीत सगुण भक्ति में ईश्वर को साकार रूप में स्वीकार किया

गया है। राम और कृष्ण इसके प्रमुख आराध्य हैं। तुलसीदास रामभक्ति और सूरदास कृष्णभक्ति के प्रतिनिधि हैं। निर्गुण संत कवि जाति-पाँति, कर्मकांड और बाहरी आडंबर का विरोध करते हैं। सगुण कवियों में ईश्वर की लीला, रूप, गुण और भक्त-भगवान संबंध का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। दोनों धाराओं का उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति और मानव कल्याण है।

8. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

उत्तर:

रीतिकाल में काव्यशास्त्रीय नियमों और श्रृंगार भाव की प्रधानता रही। इस काल के कवियों ने रस, अलंकार, नायिका-भेद, नख-शिख वर्णन और काव्य-रीति पर विशेष ध्यान दिया। श्रृंगार इसका प्रमुख रस रहा, जिसमें संयोग और वियोग दोनों का वर्णन मिलता है। राजाश्रय के कारण दरबारी संस्कृति का प्रभाव भी दिखाई देता है। बिहारी, केशवदास और घनानंद इसके प्रमुख कवि हैं। रीतिकालीन कवियों ने ब्रजभाषा को अत्यंत समृद्ध बनाया। यद्यपि इस काल में श्रृंगार की अधिकता दिखाई देती है, फिर भी नीति, भक्ति और प्रकृति-वर्णन की रचनाएँ भी मिलती हैं। भाषा और अलंकार की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है।

9. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर:

आधुनिक हिन्दी काव्य में सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय भावना, व्यक्तिवाद और यथार्थवाद का विकास हुआ। भारतेंदु युग में राष्ट्रीय जागरण, द्विवेदी युग में सामाजिक सुधार और भाषा-शुद्धि, छायावाद में प्रकृति तथा आत्मानुभूति और

छायावादोत्तर काव्य में सामाजिक यथार्थ प्रमुख हुआ। आधुनिक कवियों ने स्वतंत्रता, गरीबी, शोषण, स्त्री-स्थिति और सामाजिक असमानता जैसे विषयों को कविता में स्थान दिया। मुक्तछंद और नई कविता जैसी नई काव्य-शैलियों का विकास हुआ। निराला, पंत, महादेवी, प्रसाद, अज्ञेय, नागार्जुन, मुक्तिबोध और धूमिल आदि कवियों ने आधुनिक हिन्दी कविता को नई दिशा दी।

10. भारतेंदु युग का हिन्दी साहित्य में क्या महत्व है?

उत्तर:

भारतेंदु युग आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास का महत्वपूर्ण चरण है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार और आधुनिक दृष्टि का विकास किया। इस युग में पत्रकारिता, नाटक, निबंध और कविता का विकास हुआ। अंग्रेजी शासन के प्रभाव तथा देश की सामाजिक स्थिति को साहित्य में व्यक्त किया गया। भारतेंदु ने मातृभाषा के महत्व को स्थापित किया। उनके साहित्य में देशप्रेम, सामाजिक कुरीतियों का विरोध और जन-जागरण की भावना दिखाई देती है। इसी कारण भारतेंदु को आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक कहा जाता है। उनके प्रयासों ने हिन्दी को आधुनिक साहित्यिक अभिव्यक्ति की समर्थ भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आदिकालीन कवि

11. विद्यापति के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

विद्यापति मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि हैं।

उनके काव्य में श्रृंगार, प्रेम, विरह और भक्ति का सुंदर समन्वय मिलता है। राधा-कृष्ण के प्रेम के माध्यम से उन्होंने मानवीय प्रेम की गहरी अनुभूतियों को व्यक्त किया। उनकी पदावली में भावों की कोमलता, संगीतात्मकता और सहजता है। संयोग और वियोग दोनों अवस्थाओं का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। विद्यापति की भाषा में मैथिली का माधुर्य दिखाई देता है। उनके पद लोकगीतों की तरह सहज और गेय हैं। प्रेम की सूक्ष्म अनुभूतियों को व्यक्त करने की क्षमता के कारण विद्यापति का हिन्दी काव्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

12. विद्यापति के काव्य में श्रृंगार भावना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

विद्यापति के काव्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता श्रृंगार भावना है। उन्होंने राधा और कृष्ण के प्रेम के माध्यम से प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण किया। उनके यहाँ मिलन की प्रसन्नता, विरह की पीड़ा, मान, अनुराग और प्रतीक्षा जैसे भाव अत्यंत स्वाभाविक हैं। नायिका के मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण उनकी विशेषता है। उनका श्रृंगार केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें मन की भावनाओं की गहराई भी है। भाषा में माधुर्य और संगीतात्मकता होने के कारण उनके पद अत्यंत प्रभावशाली बन जाते हैं। विद्यापति की श्रृंगारिक अनुभूति ने बाद के कृष्णभक्ति और रीतिकाव्य को भी प्रभावित किया।

13. विद्यापति की पदावली की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

विद्यापति की पदावली उनकी काव्य-प्रतिभा का श्रेष्ठ उदाहरण है।

इसमें मुख्यतः राधा-कृष्ण प्रेम, विरह, संयोग, मान और अनुराग का चित्रण मिलता है। पदों की भाषा सरल, मधुर और संगीतात्मक है। उनकी रचनाएँ गेय होने के कारण लोकजीवन में भी लोकप्रिय हुईं। विद्यापति ने नायिका के मनोभावों को बड़ी सूक्ष्मता से व्यक्त किया। प्रकृति और मानवीय भावों का सुंदर सामंजस्य मिलता है। उनकी पदावली में श्रृंगार के साथ भक्ति का भी समावेश दिखाई देता है। भावों की स्वाभाविकता, भाषा की मधुरता और संगीतात्मकता के कारण विद्यापति हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

14. गोरखनाथ की काव्य-चेतना की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

गोरखनाथ नाथपंथ के प्रमुख कवि और योगी माने जाते हैं। उनकी काव्य-चेतना में योग, आत्मसंयम, गुरु-महिमा, वैराग्य और आध्यात्मिक साधना प्रमुख हैं। उन्होंने बाहरी आडंबर और कर्मकांड की अपेक्षा आंतरिक साधना पर बल दिया। उनकी वाणी में लोकजीवन से जुड़े उदाहरण और सहज भाषा का प्रयोग मिलता है। गोरखनाथ ने मनुष्य को अपने भीतर सत्य की खोज करने का संदेश दिया। उनकी रचनाओं में उलटबाँसी और रहस्यात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है। आगे चलकर कबीर जैसे संत कवियों की वैचारिक पृष्ठभूमि पर नाथ परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है।

15. 'गोरखबानी' का साहित्यिक महत्व बताइए।

उत्तर:

'गोरखबानी' में गोरखनाथ की शिक्षाओं और आध्यात्मिक विचारों का संकलन मिलता है। इसमें योग-साधना, गुरु का महत्व,

आत्मज्ञान, वैराग्य और जीवन-दर्शन प्रमुख हैं। गोरखबानी की भाषा लोक के निकट है और इसमें सहज अभिव्यक्ति मिलती है। कवि ने बाहरी धार्मिक आडंबरों के बजाय आत्मानुशासन और साधना को महत्व दिया। उनकी वाणी में प्रश्नोत्तर शैली तथा प्रतीकात्मकता दिखाई देती है। 'गोरखबानी' का महत्व इसलिए भी है कि उसने हिन्दी की प्रारम्भिक लोकाभिमुख काव्य-परंपरा को मजबूत किया। निर्गुण संत काव्य के विकास में नाथ परंपरा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

16. अमीर खुसरो का हिन्दी साहित्य में क्या योगदान है?

उत्तर:

अमीर खुसरो भारतीय साहित्य और संस्कृति के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उन्होंने फारसी के साथ-साथ हिन्दवी भाषा में भी रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं में लोकजीवन, प्रेम, हास्य और संगीत का सुंदर समन्वय मिलता है। पहेलियाँ, मुकरियाँ और लोकधर्मी रचनाएँ उनकी लोकप्रियता का आधार हैं। खुसरो ने भारतीय और फारसी सांस्कृतिक तत्वों के मेल को बढ़ावा दिया। संगीत के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उनकी भाषा सरल और जनसामान्य के निकट थी। हिन्दी की प्रारम्भिक लोकाभिव्यक्ति और सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि से अमीर खुसरो का साहित्य विशेष महत्व रखता है।

17. अमीर खुसरो की पहेलियों और मुकरियों की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ उनकी लोकाभिमुख

रचनात्मकता का परिचय देती हैं। पहेलियों में किसी वस्तु या घटना को संकेत, रूपक और चतुर प्रश्न के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मुकरियों में हास्य, विनोद और शब्द-चातुर्य की प्रधानता रहती है। इन रचनाओं की भाषा सरल, बोलचाल की और मनोरंजक है। खुसरो ने लोकजीवन से जुड़े विषयों को अपनाया, जिससे उनकी रचनाएँ सामान्य जनता के बीच लोकप्रिय हुईं। उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और संस्कृति की झलक मिलती है। इस प्रकार पहेलियाँ और मुकरियाँ हिन्दी की लोकधर्मी एवं मनोरंजक काव्य-परंपरा को समृद्ध करती हैं।

भक्तिकालीन सगुण काव्य

18. सूरदास के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

सूरदास कृष्णभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवियों में माने जाते हैं। उनके काव्य में वात्सल्य, श्रृंगार, भक्ति और कृष्णलीला का सुंदर चित्रण मिलता है। बालकृष्ण की चंचलता, यशोदा का मातृप्रेम और गोपियों का कृष्ण के प्रति अनुराग अत्यंत प्रभावशाली है। सूरदास ने मानवीय भावनाओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण किया। उनकी भाषा ब्रजभाषा अत्यंत मधुर और संगीतात्मक है। 'सूरसागर' उनकी प्रसिद्ध कृति है। उनके काव्य में कृष्ण केवल भगवान नहीं, बल्कि बालक, मित्र और प्रियतम के रूप में भी दिखाई देते हैं। इसलिए सूरदास का काव्य भक्ति और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय है।

19. सूरदास के वात्सल्य-वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सूरदास वात्सल्य रस के अप्रतिम कवि हैं। उन्होंने बालकृष्ण की बाल-चेष्टाओं, नटखटपन, भोलेपन और माता यशोदा के प्रेम का अत्यंत जीवंत चित्रण किया है। कृष्ण का माखन चुराना, ग्वाल-बालों के साथ खेलना और माता से शिकायत करना उनके वात्सल्य वर्णन को स्वाभाविक बनाता है। यशोदा के मन में कृष्ण के प्रति ममता, चिंता और स्नेह के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। सूरदास ने बाल मनोविज्ञान को अत्यंत सूक्ष्मता से समझा। उनकी ब्रजभाषा सरल, मधुर और भावपूर्ण है। इसी कारण उनका वात्सल्य-वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य उपलब्धि माना जाता है।

20. सूरदास के काव्य में कृष्ण का स्वरूप कैसा है?

उत्तर:

सूरदास के काव्य में कृष्ण का स्वरूप बहुआयामी है। वे कभी नटखट बालक, कभी प्रेमी, कभी गोपियों के प्रिय और कभी परम ईश्वर के रूप में दिखाई देते हैं। बालकृष्ण की चंचलता और भोलेपन ने उनके वात्सल्य काव्य को अत्यंत आकर्षक बनाया है। राधा और गोपियों के साथ उनका प्रेम श्रृंगार और भक्ति का सुंदर रूप प्रस्तुत करता है। कृष्ण के माध्यम से सूरदास ने प्रेम, करुणा, समर्पण और ईश्वर-भक्ति की भावनाओं को व्यक्त किया। उनके कृष्ण लोकजीवन से जुड़े हुए लगते हैं। यही मानवीयता उनके काव्य को अत्यंत प्रभावशाली बनाती है।

21. तुलसीदास के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

तुलसीदास रामभक्ति शाखा के महान कवि हैं। उनके काव्य में भक्ति, मर्यादा, लोकमंगल, नीति, आदर्शवाद और समन्वय की भावना प्रमुख है। उन्होंने राम को आदर्श पुत्र, पति, भाई और राजा के रूप में प्रस्तुत किया। 'रामचरितमानस' उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है। तुलसीदास की भाषा अवधी तथा ब्रज दोनों रूपों में समृद्ध है। उनके काव्य में धर्म के साथ-साथ मानव जीवन के आदर्शों की स्थापना होती है। वे समाज को सत्य, कर्तव्य, प्रेम और सदाचार का संदेश देते हैं। लोकमंगल की भावना उनके काव्य का केंद्रीय तत्व है। इसी कारण तुलसी हिन्दी साहित्य के महानतम कवियों में गिने जाते हैं।

22. तुलसीदास की रामभक्ति की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

तुलसीदास की रामभक्ति दास्य, श्रद्धा, समर्पण और मर्यादा पर आधारित है। उनके राम केवल ईश्वर नहीं बल्कि आदर्श मानव और आदर्श शासक भी हैं। तुलसी ने राम के चरित्र के माध्यम से सत्य, धर्म, करुणा, त्याग और कर्तव्य का संदेश दिया। उनकी भक्ति में लोकमंगल की भावना है। वे भक्त और भगवान के संबंध को अत्यंत आत्मीय बनाते हैं। तुलसी की रामभक्ति में ज्ञान और कर्म का भी समन्वय मिलता है। 'रामचरितमानस' में राम का जीवन भारतीय आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए तुलसी की भक्ति व्यक्तिगत मुक्ति के साथ सामाजिक और नैतिक जीवन को भी दिशा देती है।

23. 'रामचरितमानस' का साहित्यिक महत्व बताइए।

उत्तर:

‘रामचरितमानस’ तुलसीदास की अमर कृति और हिन्दी साहित्य का महान ग्रंथ है। इसमें भगवान राम के जीवन के माध्यम से धर्म, नीति, आदर्श, भक्ति और लोकमंगल की स्थापना की गई है। इसकी भाषा मुख्यतः अवधी है, जो अत्यंत सरल और प्रभावशाली है। तुलसी ने राम के चरित्र में आदर्श पुत्र, भाई, पति और राजा के गुणों को प्रस्तुत किया। ‘रामचरितमानस’ का प्रभाव साहित्य के साथ भारतीय समाज और संस्कृति पर भी व्यापक रहा है। इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों और मानवीय संबंधों का चित्रण मिलता है। इसकी लोकप्रियता आज भी बनी हुई है। हिन्दी साहित्य में इसका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निर्गुण संत काव्य

24. कबीर की निर्गुण भक्ति की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

कबीर निर्गुण संत काव्य के प्रमुख कवि हैं। उनकी भक्ति में ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापक माना गया है। कबीर ने जाति-पाँति, धार्मिक पाखंड, कर्मकांड और बाहरी आडंबरों का तीखा विरोध किया। वे गुरु को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं, क्योंकि गुरु ही आत्मज्ञान का मार्ग दिखाता है। कबीर की भक्ति प्रेम, ज्ञान और आत्मानुभूति पर आधारित है। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम दोनों समुदायों की रूढ़ियों की आलोचना की और मानव समानता का संदेश दिया। उनकी भाषा सधुक्कड़ी तथा लोकभाषाओं से निर्मित है। दोहा, साखी और सबद उनकी प्रमुख काव्य-शैलियाँ हैं। उनकी वाणी आज भी सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण स्रोत है।

25. कबीर के काव्य में गुरु का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर के काव्य में गुरु का स्थान अत्यंत ऊँचा है। उनके अनुसार गुरु वह व्यक्ति है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करके आत्मज्ञान और सत्य का मार्ग दिखाता है। केवल बाहरी धार्मिक कर्मकांड करने से ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है; इसके लिए सही मार्गदर्शन आवश्यक है। गुरु शिष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराता है। कबीर ने गुरु को आध्यात्मिक यात्रा का मार्गदर्शक माना है। उनके काव्य में गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण की भावना बार-बार दिखाई देती है। इस प्रकार कबीर के लिए गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि आत्मबोध और ईश्वर-प्राप्ति का माध्यम है।

26. कबीर के काव्य में सामाजिक चेतना का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

कबीर का काव्य सामाजिक चेतना से अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धार्मिक कट्टरता और कर्मकांड का विरोध किया। वे मनुष्य की श्रेष्ठता को उसके कर्म और आचरण से जोड़ते हैं, जन्म से नहीं। उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समाजों में व्याप्त रूढ़ियों पर प्रश्न उठाए। कबीर का उद्देश्य किसी धर्म का विरोध करना नहीं, बल्कि धर्म के नाम पर होने वाले पाखंड को समाप्त करना था। उनकी वाणी मानवता, प्रेम और समानता का संदेश देती है। इस दृष्टि से कबीर केवल भक्त कवि नहीं, बल्कि महान सामाजिक चिंतक भी हैं। उनकी सामाजिक चेतना आज भी प्रासंगिक है।

रीतिकालीन काव्य

27. केशवदास के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

केशवदास रीतिकाल के प्रमुख आचार्य कवि हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य को रीति, रस, अलंकार और काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों से समृद्ध किया। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'रसिकप्रिया' और 'कविप्रिया' प्रमुख हैं। उनके काव्य में शृंगार रस की विशेष प्रधानता है। उन्होंने नायिका-भेद, प्रेम की अवस्थाओं और अलंकारों का व्यवस्थित वर्णन किया। उनकी भाषा ब्रजभाषा है, जिसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग मिलता है। केशव की कविता में पांडित्य और कलात्मकता दोनों दिखाई देते हैं। हिन्दी में रीतिकाव्य की सैद्धांतिक परंपरा को स्थापित करने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

28. केशवदास की 'रामचंद्रिका' का महत्व बताइए।

उत्तर:

'रामचंद्रिका' केशवदास की प्रसिद्ध रचना है। इसमें रामकथा को रीतिकालीन काव्य-शैली में प्रस्तुत किया गया है। कृति में अलंकार, छंद, काव्य-कौशल और वर्णनात्मकता की प्रधानता दिखाई देती है। केशव ने राम के चरित्र के साथ विभिन्न प्रसंगों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया। 'रामचंद्रिका' में तुलसी की तरह लोकभक्ति की प्रधानता नहीं, बल्कि रीतिकाव्य की कलात्मक दृष्टि अधिक दिखाई देती है। भाषा ब्रजभाषा है और इसमें संस्कृत काव्यशास्त्र का प्रभाव स्पष्ट है। यह कृति केशव की विद्वत्ता और काव्यशिल्प का परिचय देती है तथा रीतिकालीन रामकाव्य की महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।

29. बिहारीलाल के दोहों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

बिहारीलाल रीतिकाल के प्रसिद्ध मुक्तक कवि हैं। उनकी प्रमुख कृति 'बिहारी सतसई' है। उनके दोहों में कम शब्दों में गहरे भाव व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। श्रृंगार उनका प्रमुख विषय है, जिसमें प्रेम, मिलन, विरह, मान और नायिका-भेद का सुंदर चित्रण मिलता है। बिहारी ने अलंकारों का अत्यंत कलात्मक प्रयोग किया। उनके दोहों में सूक्ष्म भाव, संक्षिप्तता, व्यंजना और शब्द-चमत्कार विशेष रूप से दिखाई देते हैं। ब्रजभाषा को उन्होंने अत्यंत परिष्कृत रूप प्रदान किया। बिहारी का काव्य यह सिद्ध करता है कि सीमित शब्दों में भी अत्यंत व्यापक भाव-संसार व्यक्त किया जा सकता है।

30. घनानंद के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

घनानंद रीतिकाल के विशिष्ट प्रेम-कवि हैं। उनके काव्य में प्रेम की आत्मीयता, विरह, वेदना और व्यक्तिगत अनुभूति प्रमुख है। अन्य रीतिकालीन कवियों की अपेक्षा घनानंद के यहाँ प्रेम अधिक व्यक्तिगत और हृदयस्पर्शी दिखाई देता है। उनके काव्य में कृत्रिमता कम और भावों की स्वाभाविकता अधिक है। भाषा ब्रजभाषा है, जिसमें कोमलता और संगीतात्मकता मिलती है। विरह की पीड़ा को उन्होंने अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। उनके प्रेम में समर्पण और निष्ठा की भावना है। इसलिए घनानंद को रीतिकाल में व्यक्तिगत प्रेमानुभूति और विरह-वेदना का श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

31. रीतिकालीन काव्य में शृंगार रस का स्वरूप बताइए।

उत्तर:

रीतिकालीन काव्य में शृंगार रस को विशेष महत्व मिला। इसके दो प्रमुख रूप हैं—संयोग और वियोग। संयोग में नायक-नायिका के मिलन, सौंदर्य और प्रेम का वर्णन होता है, जबकि वियोग में विरह, प्रतीक्षा, मान और पीड़ा की अभिव्यक्ति होती है। नायिका-भेद और नख-शिख वर्णन भी इसी परंपरा का हिस्सा हैं। बिहारी, केशव और घनानंद ने शृंगार को अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत किया। बिहारी में अलंकारिक चमत्कार, केशव में शास्त्रीयता और घनानंद में व्यक्तिगत प्रेम-वेदना दिखाई देती है। रीतिकालीन शृंगार ने ब्रजभाषा को भाव और कलात्मकता की दृष्टि से समृद्ध किया।

आधुनिककालीन कवि

32. भारतेन्दु हरिश्चंद्र की काव्य-विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख प्रवर्तक हैं। उनकी कविता में देशप्रेम, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार और जन-जागरण की भावना प्रमुख है। उन्होंने तत्कालीन भारत की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को साहित्य का विषय बनाया। 'मातृभाषा प्रेम' संबंधी उनकी रचनाएँ हिन्दी भाषा के प्रति गहरी निष्ठा व्यक्त करती हैं। वे अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और विदेशी शासन की समस्याओं के प्रति सजग थे। उनकी भाषा सरल और प्रभावपूर्ण है। भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को आधुनिक विषयों से जोड़ा। इसलिए उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक कहा जाता है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता और आधुनिक चेतना का सुंदर समन्वय मिलता है।

33. जयशंकर प्रसाद के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख कवि हैं। उनके काव्य में प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य, रहस्य, मानवीय संवेदना और राष्ट्रीय चेतना का सुंदर समन्वय मिलता है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी अत्यंत काव्यात्मक है। 'कामायनी' उनकी प्रसिद्ध कृति है। प्रसाद ने मानव जीवन की समस्याओं और भावनाओं को दार्शनिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनकी कविता में प्रकृति मानवीय भावनाओं की सहचरी बन जाती है। उनके काव्य में इतिहास और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना भी दिखाई देती है। कल्पना, प्रतीक और सौंदर्य-बोध उनकी काव्य-शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। हिन्दी छायावाद को समृद्ध करने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

34. 'आँसू' कविता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

जयशंकर प्रसाद की 'आँसू' एक भावप्रधान काव्य-कृति है। इसमें विरह, करुणा, स्मृति और व्यक्तिगत वेदना की अभिव्यक्ति मिलती है। कवि ने आँसू को केवल दुःख का प्रतीक नहीं माना, बल्कि उसे मानवीय संवेदना और प्रेम की गहराई से जोड़ा है। कविता में आत्मानुभूति की प्रधानता है। भाषा अत्यंत कोमल, संगीतात्मक और भावपूर्ण है। प्रकृति के चित्रों के माध्यम से कवि अपनी आंतरिक अनुभूतियों को व्यक्त करता है। 'आँसू' में छायावादी काव्य की कल्पनाशीलता, रहस्यात्मकता और भावुकता स्पष्ट दिखाई देती है। यह रचना प्रसाद की संवेदनशील काव्य-प्रतिभा का सुंदर उदाहरण है।

35. निराला के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिन्दी कविता के महान कवि हैं। उनके काव्य में स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, सामाजिक विद्रोह, प्रकृति और यथार्थ प्रमुख हैं। उन्होंने परंपरागत काव्य-रूढ़ियों को तोड़कर मुक्तछंद को लोकप्रिय बनाया। 'वर दे वीणावादिनी वर दे' में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरण की भावना है। 'वह तोड़ती पत्थर' में श्रमिक जीवन और सामाजिक विषमता का यथार्थ चित्रण मिलता है। निराला की भाषा में ओज, संवेदना और प्रयोगशीलता है। उन्होंने शोषित और पीड़ित मनुष्य को कविता का विषय बनाया। इसलिए निराला आधुनिक हिन्दी कविता में स्वतंत्रता और विद्रोह के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

36. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने श्रमिक स्त्री के माध्यम से गरीबी, श्रम और सामाजिक विषमता को प्रस्तुत किया है। कवि इलाहाबाद के रास्ते में पत्थर तोड़ती एक स्त्री को देखता है। कठोर धूप और कठिन परिस्थितियों के बावजूद वह निरंतर काम करती रहती है। उसका जीवन आर्थिक शोषण और संघर्ष का प्रतीक बन जाता है। कविता में श्रम करने वाली स्त्री के प्रति कवि की सहानुभूति और सम्मान दिखाई देता है। निराला ने उसके माध्यम से उस समाज पर प्रश्न उठाया है जहाँ मेहनत करने वाले लोगों को सम्मान और सुविधाएँ नहीं मिलतीं। यह कविता सामाजिक यथार्थ और मानवतावादी चेतना की प्रभावशाली रचना है।

37. सुमित्रानंदन पंत के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख प्रकृति-कवि हैं। उनके काव्य में प्रकृति-सौंदर्य, कोमल भावनाएँ, कल्पना, मानवतावाद और सौंदर्य-बोध प्रमुख हैं। प्रकृति उनके लिए केवल बाहरी दृश्य नहीं, बल्कि जीवंत शक्ति है। 'यह धरती कितना देती है' जैसी रचनाओं में धरती और मानव के संबंध को प्रस्तुत किया गया है। पंत की भाषा अत्यंत कोमल, मधुर और संगीतात्मक है। उनके काव्य में आरंभिक चरण में प्रकृति और सौंदर्य की प्रधानता रही, बाद में सामाजिक और मानवीय चेतना का विस्तार हुआ। उन्होंने हिन्दी कविता को सौंदर्य और प्रकृति की नवीन दृष्टि प्रदान की।

38. महादेवी वर्मा के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं। उनके काव्य में विरह, वेदना, करुणा, रहस्य और आध्यात्मिक प्रेम प्रमुख हैं। उनकी कविताओं में एक अज्ञात प्रिय की खोज दिखाई देती है। वेदना उनके काव्य का केंद्रीय भाव है, लेकिन यह व्यक्तिगत होकर भी सार्वभौमिक मानवीय संवेदना बन जाती है। 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' जैसी पंक्तियों में समर्पण और प्रेम की भावना व्यक्त होती है। उनकी भाषा अत्यंत कोमल, संगीतात्मक और प्रतीकात्मक है। प्रकृति उनके भावों की सहचरी बनती है। महादेवी को आधुनिक हिन्दी की 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है।

39. 'मौन निमंत्रण' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'मौन निमंत्रण' में सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति और मनुष्य के बीच सूक्ष्म संबंध को व्यक्त किया है। कविता में प्रकृति अपने सौंदर्य के माध्यम से मनुष्य को आकर्षित करती है। यह निमंत्रण शब्दों से नहीं, बल्कि प्रकृति के मौन संकेतों और सौंदर्य से मिलता है। कवि प्रकृति के रंग, रूप और वातावरण में एक गहरी आत्मीयता अनुभव करता है। कविता में छायावादी कल्पना और सौंदर्य-बोध स्पष्ट है। प्रकृति कवि के अंतर्मन को प्रभावित करती है और उसे आत्मचिंतन की ओर ले जाती है। इस प्रकार 'मौन निमंत्रण' प्रकृति के माध्यम से जीवन और आत्मा के गहरे संबंध को व्यक्त करने वाली रचना है।

40. छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का महत्वपूर्ण काव्य-आंदोलन है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में आत्मानुभूति, प्रकृति-प्रेम, रहस्यवाद, सौंदर्य-बोध, कल्पना और व्यक्तिवाद शामिल हैं। छायावादी कवियों ने बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के अंतर्मन को अधिक महत्व दिया। प्रकृति को मानवीय भावनाओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया गया। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा इसके चार प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। छायावादी भाषा प्रतीकात्मक, कोमल और संगीतात्मक है। इस आंदोलन ने हिन्दी कविता को व्यक्तिगत संवेदना, प्रकृति और नवीन सौंदर्य-दृष्टि प्रदान की।

छायावादोत्तर काव्य

41. छायावादोत्तर हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

उत्तर:

छायावाद के बाद हिन्दी कविता में सामाजिक यथार्थ और जनजीवन की समस्याओं पर अधिक ध्यान दिया गया। छायावादोत्तर कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, जनवादी चेतना और यथार्थवाद प्रमुख हैं। कवियों ने गरीबी, शोषण, बेरोजगारी, युद्ध, राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक असमानता को कविता का विषय बनाया। भाषा अधिक सहज और बोलचाल के निकट हुई। मुक्तछंद का व्यापक प्रयोग हुआ। अज्ञेय, नागार्जुन, मुक्तिबोध, धूमिल आदि कवियों ने आधुनिक मनुष्य की समस्याओं को नए ढंग से व्यक्त किया। इस प्रकार छायावादोत्तर कविता ने कविता को सामाजिक यथार्थ और जनजीवन से अधिक निकट जोड़ा।

42. अज्ञेय की काव्य-विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्रयोगवादी और नई कविता के प्रमुख कवि हैं। उनके काव्य में व्यक्तिवाद, आत्मचिंतन, प्रयोगशीलता, आधुनिक संवेदना और प्रकृति प्रमुख हैं। उन्होंने कविता में नए प्रतीकों, बिंबों और भाषा-प्रयोगों को महत्व दिया। 'नदी के द्वीप' जैसी रचनाओं में व्यक्ति और समाज के संबंध को सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया गया है। अज्ञेय की कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता और अस्तित्व-बोध महत्वपूर्ण है। वे परंपरागत काव्य-शैली से अलग नई अभिव्यक्ति की खोज करते हैं। उनकी

काव्य-दृष्टि आधुनिक मनुष्य की जटिल मानसिकता को समझने का प्रयास करती है।

43. 'नदी के द्वीप' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'नदी के द्वीप' में अज्ञेय ने व्यक्ति और समाज के संबंध को नदी और द्वीप के प्रतीक द्वारा व्यक्त किया है। नदी निरंतर प्रवाहमान समाज का प्रतीक है, जबकि द्वीप व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति समाज का हिस्सा होते हुए भी अपनी अलग पहचान और स्वतंत्रता बनाए रखना चाहता है। कविता में संबंध, अस्तित्व और व्यक्तित्व के प्रश्न उठाए गए हैं। अज्ञेय ने प्रतीकात्मक शैली में आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति को प्रस्तुत किया है। भाषा गंभीर, चिंतनप्रधान और बिंबात्मक है। यह कविता नई कविता की आधुनिक चेतना और प्रयोगशीलता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

44. नागार्जुन की कविता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

नागार्जुन जनवादी चेतना के प्रमुख हिन्दी कवि हैं। उनकी कविता में जनजीवन, सामाजिक विषमता, शोषण, राजनीतिक व्यवस्था और आम आदमी की समस्याएँ प्रमुख हैं। वे किसान, मजदूर और गरीब वर्ग के जीवन को कविता में स्थान देते हैं। उनकी भाषा सहज, सरल और लोकजीवन से जुड़ी है। उन्होंने व्यंग्य को प्रभावशाली हथियार बनाया। 'अकाल और उसके बाद' जैसी कविता में उन्होंने भूख और गरीबी की मार्मिक स्थिति प्रस्तुत की है। नागार्जुन की कविता में जनपक्षधरता स्पष्ट दिखाई देती है। वे साहित्य को

समाज के संघर्षों और आम आदमी की आवाज से जोड़ते हैं। इसी कारण उन्हें जनकवि कहा जाता है।

45. 'अकाल और उसके बाद' कविता का संदेश क्या है?

उत्तर:

नागार्जुन की 'अकाल और उसके बाद' कविता में अकाल की भयावह स्थिति और उसके कारण उत्पन्न भूख, गरीबी और जीवन-संघर्ष का चित्रण है। कविता में केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि घर-परिवार और आसपास का पूरा वातावरण अकाल से प्रभावित दिखाई देता है। कवि ने अत्यंत सामान्य और प्रभावशाली प्रतीकों के माध्यम से भूख की पीड़ा को व्यक्त किया है। अकाल के बाद जीवन में थोड़ी आशा और गतिविधि लौटती है। कविता का उद्देश्य गरीब जनता की वास्तविक स्थिति को सामने लाना है। इसमें करुणा के साथ सामाजिक यथार्थ और जनवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। यह कविता संवेदना और सामाजिक चेतना की महत्वपूर्ण रचना है।

46. मुक्तिबोध के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

गजानन माधव मुक्तिबोध नई कविता के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनके काव्य में आत्मसंघर्ष, सामाजिक विसंगति, बौद्धिक बेचैनी, मध्यवर्गीय संकट और यथार्थ-बोध प्रमुख हैं। वे मनुष्य के बाहरी और आंतरिक संघर्ष को एक साथ प्रस्तुत करते हैं। 'विचार आते हैं' जैसी रचनाओं में विचार और जीवन के संबंध पर चिंतन दिखाई देता है। मुक्तिबोध की भाषा जटिल होते हुए भी गहरी अर्थवत्ता रखती है। उनके काव्य में प्रतीक, बिंब और फैंटेसी का प्रयोग मिलता है। वे साहित्य में ईमानदार आत्मालोचन और सामाजिक

जिम्मेदारी को आवश्यक मानते हैं। आधुनिक हिन्दी कविता में उनका विशिष्ट स्थान है।

47. धर्मवीर भारती के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि और साहित्यकार हैं। उनके काव्य में प्रेम, संवेदना, मानवीय संबंध, आधुनिक जीवन की जटिलता और अस्तित्व-बोध प्रमुख हैं। उनकी भाषा भावपूर्ण और संगीतात्मक है। वे व्यक्तिगत अनुभूति को व्यापक मानवीय संदर्भ से जोड़ते हैं। 'बोधाई का गीत' तथा 'कविता की मौत' जैसी रचनाओं में आधुनिक मनुष्य और साहित्य की समस्याओं पर विचार मिलता है। भारती की कविता में परंपरा और आधुनिकता का संवाद दिखाई देता है। वे प्रेम को केवल व्यक्तिगत भावना न मानकर जीवन की गहरी मानवीय आवश्यकता के रूप में देखते हैं। उनकी काव्य-दृष्टि संवेदनशील और चिंतनप्रधान है।

48. धूमिल की कविता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

धूमिल आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख जनवादी और व्यंग्यात्मक कवि हैं। उनकी कविता में राजनीतिक व्यवस्था, सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार, शोषण और आम आदमी की पीड़ा प्रमुख हैं। वे व्यवस्था की विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं। उनकी भाषा सीधी, बोलचाल की और आक्रामक है। 'मोचीराम' में जाति, वर्ग और सामाजिक व्यवस्था के प्रश्नों को उठाया गया है। धूमिल कविता को आम आदमी के जीवन से जोड़ते हैं। उनके यहाँ सुंदरता की अपेक्षा सत्य और यथार्थ को अधिक महत्व मिलता है।

उनकी कविता पाठक को सामाजिक व्यवस्था पर सोचने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करती है।

49. 'मोचीराम' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

धूमिल की 'मोचीराम' कविता सामाजिक व्यवस्था में मौजूद जाति, वर्ग और आर्थिक असमानता पर तीखा व्यंग्य करती है। मोचीराम एक सामान्य श्रमिक है, लेकिन उसके अनुभव समाज की वास्तविक संरचना को उजागर करते हैं। कविता में यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य की पहचान उसके काम और आर्थिक स्थिति से क्यों निर्धारित होती है। कवि आम आदमी के दृष्टिकोण से सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को सामने लाता है। भाषा बोलचाल की और प्रभावशाली है। कविता का उद्देश्य केवल मोची का चित्रण करना नहीं, बल्कि उसके माध्यम से पूरे समाज की वर्गीय और जातीय व्यवस्था पर प्रश्न उठाना है। यह जनवादी चेतना की महत्वपूर्ण कविता है।

50. हिन्दी साहित्य में शोध का अर्थ, उद्देश्य और महत्व बताइए।

उत्तर:

हिन्दी साहित्य में शोध का अर्थ किसी साहित्यिक विषय, रचना, लेखक या साहित्यिक प्रवृत्ति का व्यवस्थित और प्रमाणिक अध्ययन करना है। शोध का उद्देश्य नए तथ्यों की खोज, उपलब्ध जानकारी का परीक्षण तथा साहित्य की नई व्याख्या प्रस्तुत करना है। शोध में विषय-चयन, सामग्री-संग्रह, संदर्भों का अध्ययन, विश्लेषण और निष्कर्ष प्रमुख चरण हैं। साहित्य में शोध की विभिन्न प्रविधियाँ हैं, जैसे ऐतिहासिक, तुलनात्मक,

विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक पद्धति। शोध के लिए प्रमाणिक स्रोतों का उपयोग आवश्यक है। इससे साहित्य के अनदेखे पक्ष सामने आते हैं और साहित्यिक ज्ञान का विस्तार होता है। इसलिए हिन्दी साहित्य के विकास में शोध का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।